कक्षा - 12

समकालीन विश्व राजनीति

अध्याय - 6

पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन

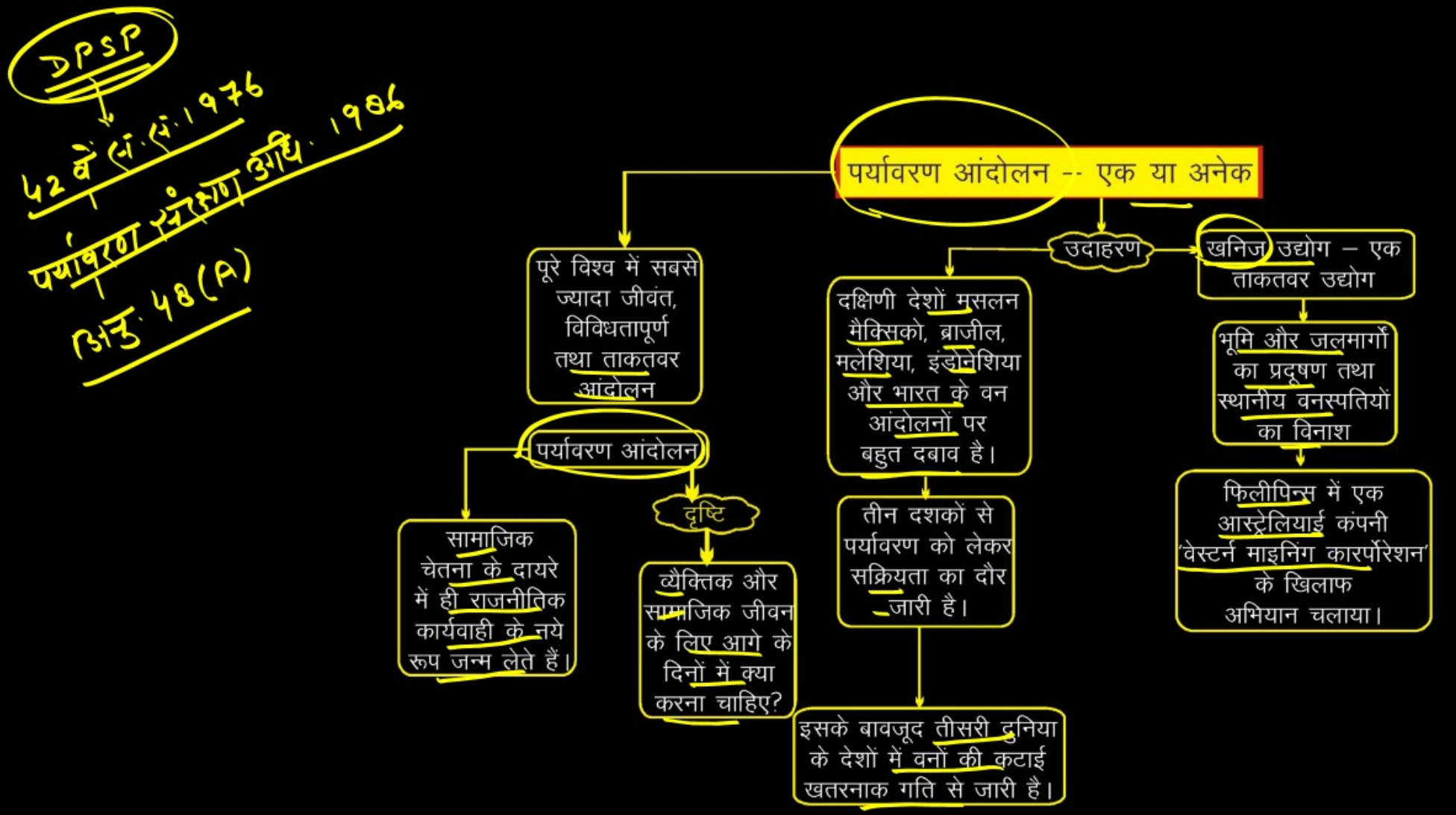
भाग - 4

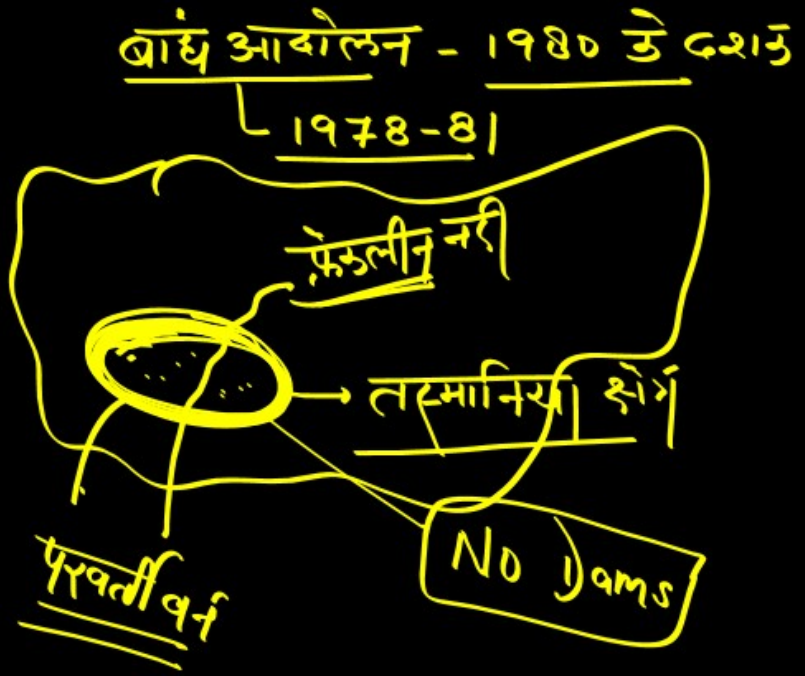
Satyaveer Yadav

पर्यावरण से संबंधित भारत सरकार के विभिन्न कार्यक्रम :-

- नेशनल 'ऑटो फ्यूल पॉलिसी' के अंतर्गत वाहनों के लिए स्वच्छतर ईंधन अनिवार्य किया।
- 2001 में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम पारित हुआ।
- इसमें ऊर्जा के ज्यादा कारगर इस्तेमाल की पहलकदमी की गयी।
- 2003 के बिजली अधिनियम में Renewable ऊर्जा के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया गया है।
- हाल में प्राकृतिक गैस के आयात और स्वच्छ कोयले के उपयोग पर आधारित प्रौद्योगिकी को अपनाने की तरफ रुझान बढ़ा है।

- भारत ने 2 अक्टूबर 2016 को पेरिस जलवायु समझौते को अनुमोदित किया।
- पुनर्नवीकृत होने वाली ऊर्जा के सबसे बड़े कार्यक्रमों में से एक भारत में चल रहा है।


DPSP
42 वें सं. सं. 1976
पर्यावरण संरक्षण अधि. 1986
अनु. 48(A)
पर्यावरण आंदोलन -- एक या अनेक
पूरे विश्व में सबसे ज्यादा जीवंत, विविधतापूर्ण तथा ताकतवर आंदोलन
पर्यावरण आंदोलन
सामाजिक चेतना के दायरे में ही राजनीतिक कार्यवाही के नये रूप जन्म लेते हैं।
दृष्टि
व्यैक्तिक और सामाजिक जीवन के लिए आगे के दिनों में क्या करना चाहिए?
उदाहरण
दक्षिणी देशों मसलन मैक्सिको, ब्राजील, मलेशिया, इंडोनेशिया और भारत के वन आंदोलनों पर बहुत दबाव है।
तीन दशकों से पर्यावरण को लेकर सक्रियता का दौर जारी है।
इसके बावजूद तीसरी दुनिया के देशों में वनों की कटाई खतरनाक गति से जारी है।
खनिज उद्योग – एक ताकतवर उद्योग
भूमि और जलमार्गों का प्रदूषण तथा स्थानीय वनस्पतियों का विनाश
फिलीपिन्स में एक आस्ट्रेलियाई कंपनी 'वेस्टर्न माइनिंग कारपोरेशन' के खिलाफ अभियान चलाया।



बड़े बाँधों के खिलाफ पर्यावरण आंदोलन :-

- 1980 के दशक के शुरूआती और मध्यवर्ती वर्षों में विश्व का पहला बाँध विरोधी आंदोलन दक्षिणी गोलार्द्ध में चला।
- ऑस्ट्रेलिया में चल रहा यह आंदोलन फ्रैंकलिन नदी तथा इसके परवर्ती वन को बचाने का आंदोलन था।
- भारत में भी बाँध-विरोधी और नदी हितैषी कुछ अग्रणी आंदोलन चल रहे हैं।
- इन आंदोलनों में नर्मदा आंदोलन सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है।

नोट :- भारत में बांध विरोधी तथा पर्यावरण बचाव में अन्य आंदोलन एक अर्थ में समानधर्मी है क्योंकि ये अहिंसा पर आधारित है।



नर्मदा बचाओ आंदोलन -

- १९८५ - प्रारम्भ
- प्रणेता - मेधा पाटेकर, बाबा आम्टे, अरुंधति राय
- उद्देश्य - विस्थापितों को पुनर्वास, पर्यावरण की रक्षा

→ टिहरी बांध आंदोलन - उत्तराखंड

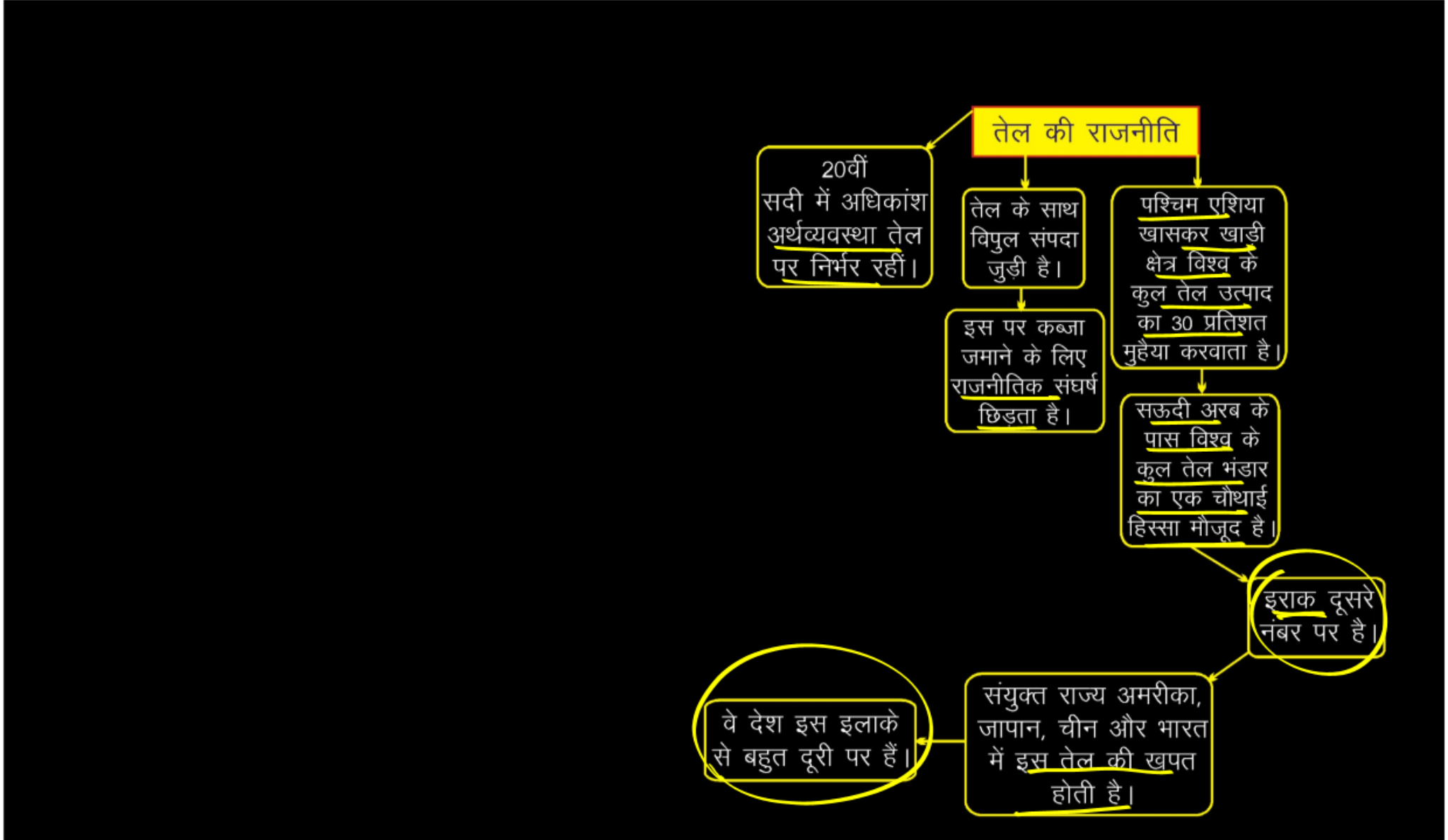
सुंदर लाल बहुगुणा — चिपको आंदोलन

संसाधनों की भू-राजनीति

- यूरोपीय ताकतों के विश्वव्यापी प्रसार का एक मुख्य साधन और मकसद रहे हैं - संसाधन
- संसाधनों को लेकर राज्यों के बीच तानातनी हुई।
- संसाधनों से जुड़ी भू-राजनीति को पश्चिमी दुनिया ने ज्यादातर व्यापारिक संबंध, युद्ध और ताकत के संदर्भ में सोचा।
- 17वीं सदी के समय इमारती लकड़ियों की आपूर्ति यूरोपीय शक्तियों की प्राथमिकताओं में रही।
- जहाज की शहतीरों के लिए इमारती लकड़ी की आवश्यकता।



- पश्चिमी देशों के राजनीतिक चिंतन का केन्द्रीय सरोकार यह था कि संसाधनों तक पहुंच अबाध रूप से बनी रहे क्योंकि सोवियत संघ इसे खतरे में डाल सकता था।


तेल की राजनीति
20वीं सदी में अधिकांश अर्थव्यवस्था तेल पर निर्भर रहीं।
तेल के साथ विपुल संपदा जुड़ी है।
इस पर कब्जा जमाने के लिए राजनीतिक संघर्ष छिड़ता है।
पश्चिम एशिया खासकर खाड़ी क्षेत्र विश्व के कुल तेल उत्पाद का 30 प्रतिशत मुहैया करवाता है।
सऊदी अरब के पास विश्व के कुल तेल भंडार का एक चौथाई हिस्सा मौजूद है।
इराक दूसरे नंबर पर है।
संयुक्त राज्य अमरीका, जापान, चीन और भारत में इस तेल की खपत होती है।
वे देश इस इलाके से बहुत दूरी पर हैं।



पानी और विश्व राजनीति

- विश्व के कुछ भागों में साफ पानी की कमी हो रही है।
- विश्व के हर हिस्से में स्वच्छ जल समान मात्रा में मौजूद नहीं
- जलधारा के उद्गम से दूर बसा हुआ देश उद्गम के नजदीक बसे हुए देश द्वारा इस पर बांध बनाने, इसके माध्यम से अत्यधिक सिंचाई करने एवं प्रदूषित करने पर आपत्ति जताता है।
- 1950 और 1960 के दशक में इजरायल सीरिया तथा जार्डन के बीच संघर्ष हुआ।
  - तुर्की, सीरिया व ईराक के बीच फरात नदी पर बांध के निर्माण को लेकर तनाव

- जीवनदायी संसाधन को लेकर हिंसक संघर्ष होने की संभावना
  - विश्व–राजनीति के कुछ विद्वानों ने 'जलयुद्ध' शब्द गढ़ा।
- क्योंकि इससे दूर बसे हुए देश को पानी की मिलने वाली मात्रा कम होगी।
  - देशों के बीच स्वच्छ जल संसाधनों को हथियाने या उनकी सुरक्षा करने के लिए हिसंक झड़पें हुई।